॥ श्रीः ॥

श्रीरामतत्व सिद्धान्तः

विरक्त श्रेष्ठ श्री सीता रामीय सरुयसंबंध प्रकाशक श्रीयुत परमहंस रामशरणेन प्रणीतः। तत् शिष्य पं. म० मिथिला शरणे न संसोधीतः।

पं. चन्द्रशेखर बाजपेयि द्वारा।

गौरीश यन्त्रालये मुद्रित्वा काशी।

सम्वत् १९६१] [प्रथम वार

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीसीतारामलक्ष्मणेभ्योनमः ।

प्रणम्यमनसारामं ससीतंसहलक्ष्मणम् ।
श्रीरामतत्वसिद्धान्तं करोमिहित्तकाम्यया ॥

अथ भेदप्रकरणम् ॥ १ ॥

कारिकावली के पहिला श्लोकके टीकाका सिद्धान्त मुक्तावली के यह पंक्ति है की ॥

मूल ।

यथाघटादिकार्यंकर्तृ जन्यंतथाक्षित्यंकुरादिकमपिनच तत्कर्तृत्वमस्मदादीनांसंभवतीतितत्कर्तृत्वेनेश्वरसिद्धिः ॥ १ ॥

टीका ।

जैसे लोकमे घटरूप कार्यसे कुम्भारको अनुमान होताहै। तैसे पृथिवी व बृक्षादि कार्यसे ईश्वरको अनुमान होताहै ईकार्य जीव सवसे न होसकताहै अकर्तृक निराकार निर्गुण ब्रह्मको अनुमाने नही होसकताहै तो माया कृत जगत्कर्तृत्वादि ब्रह्ममे है

यह कहना बडा विरुद्धहै ॥ व जहांपर ब्रह्ममे निरा कार वा निर्गुण विशेषणहै तहांपर ऐसा अर्थकरना कि मायिक आकार व मायिक गुणसे रहित ब्रह्म हैं व दिव्य आकार व दिव्य गुणसे युक्तहै ॥ कारिकावली के श्लोकहै की ॥

बुध्यादिषट्कंसंख्यादि पंचकंभावनातथा ॥ धर्माधर्मौगुणाएतेचात्मनःस्युश्चतुर्दश॥२३॥

बुद्धि सुख दुख इच्छा द्वेष यत्न गुरुत्व नाम भारी ई छौ गुण व संख्या परिमिति पृथक्त्व संयोग विभाग ई पाच गुणभावना धर्म व अधर्म ई तीनगुण सबगुण मिलाकर चौदहगुण आत्माके हैं ॥ ३२॥ संख्यादयः पंचबुद्धि रिच्छा यत्नोऽपिचेश्वरे ॥३४॥ संख्यादि ॥ ५ ॥ बुद्धि व इच्छा व यत्न ३ ई सब ८ गुण ईश्वरमेहै ॥ ३४ ॥ ई सबप्रमाणसे जीव वईश्वरमे भेद निश्चयहुया ॥ जगत् रूपकार्यसे गजरकर्ता ईश्वरको अनुमानहुया सो को है तो श्रीरामजी हैं तिसमे प्रमाण बाल्मी० रा.यु.कां.सर्गः ११८ ब्रह्माके बचन श्रीरामजी को प्रति ॥

त्वंत्रयाणां हिलोकानामादि कर्त्तास्वयं प्रभुः ॥ १८ ॥

टीका.। हे रामजी तीनोलोकके बनानेवाले आपहैं

इसीसे आपस्वयंप्रभूहैं अर्थात् आपको बनानेवाला न कोइहै ॥१८॥ कर्तृत्व व गुणकहनेसे जीवबइश्वर को रुपनिश्चयहुवा ॥

प्रकृतिंपुरुषंचैव विद्ध्यनादीउभावपि ॥ विकाराश्चगुणांश्चैव विद्धि प्रकृति संभवान् ॥ १० ॥

टीका.। प्रकृतियोहै मायापुरुषयोहै आत्माइ दोनो नित्यहै बिकारयेहै देह इन्द्री व गुणयेहैं सुख दुख मोहादिसे सबप्रकृतिसे जायमानहै वपुरुषसंज्ञाआत्माकोहै तिसमे प्रमाण अमरकोश कालबर्ग प्रथम काण्ड ॥

क्षेत्रज्ञ आत्मापुरुषः प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

टीका.। क्षेत्रज्ञ व आत्मा वपुरुष ई तीनोनाम आत्माकोहै प्रकृतिवआत्माको नित्यकहनेसे यो कोई कहतेहैं की ब्रह्मनित्यहैं प्रकृति वआत्मा अनित्यहैं सो ठीक नहीहैं ॥ १० ॥

ममैवांशो जीवलोके जीव भूतः सानातनः ॥ ७ ॥

टीका.। परमेश्वरके अंशनामभाग जीव सनातनहै

॥७॥ अंश नाम भागकोहै तिसमे प्रमाण अमरकोश वैश्यवर्गद्वितीयकांड ॥

पादस्तुरीयोभागःस्यादंशभागौतुवंटके ८७

टीका. । अंश व भाग व बंटक यहतीनो नाम भाग मात्रकेहैं तोजीव परमेश्वरके भागक्याहै किजीव सेवक है परमेश्वर स्वामीहैं यहसब प्रमाणसेजीव व ईश्वर व प्रकृतिमे नित्य वभेद निश्चय हुवा येही विशिष्टाऽद्वैतमतहुवा तिस शब्दके अर्थहै किविशि ष्टस्य अद्वैतः विशिष्टाऽद्वैतः यहषष्टीतत्पुरुष समास हुवा विशिष्ट योहै विशेषण तत्संबंधी परमात्मा अद्वैतनाम एकहैं सब बस्तु विशेषण नाम अप्रधान करके परमेश्वरमे स्वस्वामिसंबंधसे अ- न्वयहै इससे यह आया किपरमेश्वर श्रीरामजी स्वामीहैं व औरसब सेवकहै तिसमे प्रमाण बा०रा० बा०कां० सर्ग७६ ॥ परशुरामजिके वाक्य श्रीराम जीकोप्रति ॥

अक्षय्यंमधुहंतारं जानामित्वां सुरेश्वरम् ॥ धनुषोऽस्यपराम र्शात्स्व स्तितेस्तु परं- तप ॥ १७ ॥

टीका. । श्रीरामजीके सुरेश्वर कहनेसे श्रीरामजी स्वामीहुये और देवता सबसेवकहुये ॥ १६ ॥

नचेयं ममकाकुत्स्थ व्रीडा भवितुमर्हति ॥
त्वयात्रैलोक्यनाथेनयदहांविमुखीकृतः १६

टीका. । श्रीरामजीके त्रैलोक्यनाथ कहनेसे श्री रामजी स्वामीहुये व तीनोलोक सेवकहुया ॥१९॥

मूल । भा० पं० स्कं० अ० १६०

हनुमानजिके वाक्य वानर सवको प्रति ॥

सुरोऽसुरोवाप्यथवानरोऽनरः सर्वात्मनायः सुकृतज्ञमुत्तमम् ॥ भजेतरामं मनुजाकृतिं हरिंयउत्तराननयत्कोशलान्दिवमिति ॥८॥

टीका. । सुरयेहैं देवता व असुरयेहैं राक्षसदैत्य व मनुष्य व अनरयेहैं पस्वादि इसवके श्रीरामजी के भजन करनेको विधानकिये इससे आयाकि श्री रामजी स्वामीहैं व ईसव सेवकहैं ॥ ८ ॥ १ ॥

अथमोक्षप्रकरणम् ॥ २ ॥ मुक्तिबादमेयह श्रुतिहैकि ॥ ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः ॥

टीका. विनाज्ञानकेमोक्ष नंहोताहै तो किं विषय ज्ञानसेमोक्षहोताहै ई संदेहहुवा तहांपरश्रुतिहैकि॥ काशीमरणान्मुक्तिः॥ तिसका अर्थहैकि काशीमे मरणकालमे रामतारकमंत्र उपदेशजन्य श्री राम विषय ज्ञानसे मोक्षहोताहै यह अर्थकरनेसे दोनो

श्रुतिके बिरोधछुटगया एतना अर्थश्रुतिकेकरनेमे
प्रमाणहैकि॥ अथर्वणवेदके रामोत्तरतापनीयोपनि॰
षद् ॥ बृहस्पतिरूवाचयाज्ञवल्क्यम् ॥

अत्रहि जन्तोः प्राणषूत्क्रममाणेषु रुद्रस्तार
कं ब्रह्मव्याचष्टेयेनासा बमृती भूत्वामोक्षी
भवति ॥ १ ॥

टीका. । प्रथमखण्डः ॥ बृहस्पति याज्ञवल्क्यसे
कहतेभयेकि हे याज्ञवल्क्य काशीमें प्राणछुटने स॰
मयमे शिवजि रामतारकमंत्र उपदेशकरतेहैं जिस
से जीवमरण रहित होकर मोक्षहोतेहैं ॥१॥

अथहैनंभरद्वाजः पप्रच्छ याज्ञवल्क्यम् किं
तारकं किं तरतीति सहोवाच याज्ञवल्क्यः
तारकंदीर्घानलंविन्दुपूर्वकं दीर्घानलंपुनर्मा
य नमः ॥

टीका. । इसकेवाद भरद्वाजजि याज्ञवल्क्यसेपूछते
भयेकि तारकमंत्रकेक्यास्वरूपहै तवयाज्ञवल्क्यजी
कहेंकि दीर्घआकारमे अनलनामरेफहै विन्दुनाम
अनुस्वारपूर्वकहै इससे रां यहबीजसिद्धहुवा फेर
दीर्घआकारमेंरेफहै तिससे फेर रा सिद्धहुवा तिस
केवाद मायनमःहै इससेषड्क्षररामर्मंत्रासिद्धहुवा ॥
द्वितीयखण्डः ॥

यतोवाब्रह्मणोवापियेलभन्तेषड़क्षरम् ॥ जीव
न्तोमंत्रसिद्धाःस्युर्मुक्तामांप्राप्नुवन्तिते ११

टीका. । योकोइ कुलसे बा ब्राह्मण कुलसे येषड़्
क्षर रामतारकमंत्रको लाभकरतहैं ते जितेमें सिद्ध
होतेहैं व मरनेकेवाद हेशिबजिहमयोहैं रामतिनको
प्राप्तहोतेहं ॥ ११ ॥

मुमूर्षोर्दक्षिणेकर्णेयस्य कस्यापिवास्वयम्
उपदेक्ष्यसिमन्मंत्रंसमुक्तोभविताशिव १२

टीका. । हे शिवजिजिसके मरनेकोइच्छाहोअथवा
यो कोइकेदाहिनाकानमे हमारायो षड़क्षर रामता
रक मंत्रउपदेश करियेगासो मुक्तहोजायगा ॥
चतुर्थ खण्डः ॥ अध्यात्म रा. यु. कां. सर्गः १५
शिब जीके वाक्य श्रीराम जी के प्रति ॥

अहंभवन्नामगृणन्कृतार्थोवसामिकाश्याम-
निशंभवान्या ॥ मुमूर्षमाणस्याविमुक्तयेऽहं
दिशामिमंत्रंतवरामनाम ॥ ६२ ॥

टीका. । हे रामजी आपकेरामनामकोउच्चारण क
रके पार्वतीकेसाथ बराबरकाशीमें कृतार्यरहतेहैं व
मरनेको इच्छावालेके मोक्षहानेकेवास्ते आपकेमंत्र
योहे रामनामसो उपदेश करतेहैं ॥ ६२ ॥

यएतंमंत्रराजं रामचंद्रस्यषड्क्षरंनित्यमधी तेसोऽग्निपूतोभवतिससोमपूताभवतिसब्रह्म णापूतोभवति सबिष्णुनापूतोभवति सरुद्रे णापूतोभवति ससर्वेणपूतोभवति ससर्वयज्ञ क्रतुभिरिष्ठवान्भवति सवेदैर्बेज्ञातोभवति इतिहासपुराणानांरुद्रणांशतसहस्त्राणिजप्ता निभवन्तिगायत्र्याःषष्ठिशतदहस्त्राणिजप्ता निभवन्तिप्रणवानामयुतानिजप्तानिभवन्ति दशपूर्वान् दशोत्तरान् पुनातिसपङ्क्तिपाव नोभवतिसमहान्भवतिसो ऽमृतत्त्वंचगच्छ ति ॥ षष्ठः खण्डः ॥

टीका. । बिष्णु आदि सदृश पवित्र होता है राम मंत्र को जपने से ॥

२ ॥ अथ सख्यसंबंधप्रकरणम् ॥३॥ बेदा न्तसूत्रम् भगवद् ब्यासकृतम् ॥ अ० ४ ॥ पाद ॥ ४ ॥ भोगमात्र साम्यंलिङ्गाच्च २१

टीका. । परमेश्वरकेसदृश भोग व रूपहोताहैभक्त को ॥ इससेभी आयाकी श्रीरामजीकोस्मरणकरने वालाका श्रीरामजीके ऐसा भोग व रूपहोताहै ॥ अथर्व वेदीयमुण्डकोपनिषद्मे यहऋचाहैकि ॥

द्वासुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्षंपरिषस्व जातेतयोरन्यःपिप्पलंस्वाद्वत्यनशननन्योऽभि चाकशीति ॥

द्वासुपर्ण इत्यादि में आर्षत्वात् आकार आदेश हुवा इसेदहमेंदोहै एकजीब व एकअन्तरजामी ईश्वर फेरदोनोसुपर्णनामशुद्धस्वरुपहै फेरदोनोकैसाहैंकी सपुजौ नामसमान एकोयुक्संवंधोययोस्तौसयुजौ युजिरयोगेधातुहै योगश्चात्रसंवंधः तोजीव ईश्वर के एकसंवंधकौनहै तो आगे बिशेषणहै सखायौ जीव व ईश्वरदोनो सखाहैं वाकी जीव कर्म फल को भोगकर्तेहैं व ईश्वर नहीकर्तेहैं प्रकाशितरहतेहैं ॥२॥ इससे जीव ईश्वरके नित्य सख्यसंवंधसिद्ध हुवा व परमार्थीक श्रुतिके व्यावहारिक कहनाबड़ा बिरुद्धहै ॥ २ ॥

किंचाऽथर्ववणेश्रुतिरियम् ॥ योवैनित्यंधनुर्वाणांकितोभवति सपाप्मानंतरतिससंसारं तरतिस भगवद्दाश्रितो भवतिस भगद्रूपो भवति ॥

टीका। योकोई नित्य नामप्रतिदिन धनुषबाणसे अंकित होतेहै सोपापसे छुटजातेहैं सो संसारसेछु-

टजातेहैं सो भगवान् श्रीरामजीके आश्रितहोतेहैं सोभगवान् श्रीरामजीके सदृश रूपसे युक्तहोतेहैं इससे आयाकि धनुषवाणसे अंकितयोहैं सोसखाहै ष प्रतिदिन धनुषवाण धारणकरनेसे शीतलधनुष वाणके प्रमाण आया ॥

यत्स्मरतितद्रूपोभवति कीटभृंगन्यायेन ॥

टीका. । यह न्यायसबके सिद्धान्तहै जिसको यो स्मरणकरताहै तत् सदृशरुपहोताहै ॥ तत् शब्दके तत् सदृशमे लक्षणा है क्योंकि कीटकोभि भृँगको स्मरण करके भृँगसदृश रूपहोताहै कुछभृंगमे मिलनहीं जाताहै ॥ तिसमे प्रमाण भा. स. स्कं. अ. १०

कीटः पेशस्कृतारुद्धः कुड्यायांत मनुस्मरन् संरंभ भययोगे नविन्दते तत्सरूपताम् २७ कामाद्द्वेषाद्भयात्स्ने हाद्यथाभक्त्ये श्वरेमनः आवेश्यतदघं हित्वा वहवस्तद्गतिंगताः ॥२९॥

टीका. । कीटको भ्रमरअपना विलमेलजाताहै तब कीट भयवद्वेषसे भ्रमरको स्मरणकर्के भ्रमरसदृश रूपहोताहे ॥ २७ ॥ कामसे वा द्वेषसे वा भयसे वा स्नेहसे भगवान्मे कोइ प्रकारसे मनलगाकर पाप

को त्यागकर बहुत लोग भगवान्के लोकको प्राप्त हुये ॥ २६ ॥

भ० गी० अ० ८॥ यंयंवापिस्मरन् भावं त्य जत्यन्तेकलेवरम् ॥ तंतमेवेतिकौन्तेय सदातभ्दावभावितः ६ ॥

टीका.। जिसाजिसबस्तुको लोगवरावरस्मरण करताहै उसीवस्तुको मरनेके वादभि प्राप्तहोता है ॥ ६ ॥ वाल्मी. रा. उ. कां, ॥ हनुमान्जीकेवाक्य श्रीरामजीको प्रति ॥

स्नेहोमेपरमोराजन् त्वयितिष्ठतुनित्यदा ॥ भक्तिश्च नियतावीर भावो नान्यत्रगच्छतु ॥ १६ ॥

टीका.। हेरामजी हमारा परमस्नेह व भक्ती व मनके व्यापार यहसावहमारावरावर आपैमेंरहैं ॥ यह सवसेआयाकि रामजीकोस्मरणकर्के रामजी के सदृशरूपहोता है कुछरामजीमे न मीलता है ईसीसे रामतापनीमें रामतारकमंत्रके प्रधानकर्के लिखाहै और मंत्रके अंगकरके लिखाहै व शिवजी भि केवल राममंत्रकाशीमे उपदेशकरतेहैं व जैसे भृंगकोस्मरणकरके कीटकेभृंगसदृश रूप होताहै

तैसे रामजीको स्मरणकरके रामजी के सदृश रूप होताहै तो सदृशरूपहोना सखाकेधर्महै इससे भि सख्यसंबंध सिद्धहुवा ॥ वाल्मी.रा.यु.कां.सर्गः१८

मित्रभावेन संप्राप्तंनत्यजेयंकथंचन ॥ दोषो यद्यपितस्यस्यात्सतामेतदगर्हितम् ॥ ३ ॥

श्रीरामजीके बचनहै कि मित्रभावसे योकोइ हम को प्राप्तहोताहै तिसको हमकोइतरहसे त्याग न करतेहैं क्योंकि दोषयुक्ताभि मित्रहोय तो उसको त्याग न करना यह महात्मा सबके भि सिद्धान्तहै ॥ ३ ॥ बा. रा. उ. कां. सर्गः ॥ ३६ ॥

॥ श्रीरामजीके वचन बानर सबकोप्रति ॥

मधुरंश्लक्ष्णयावाचानेत्राभ्यामपिवन्निव॥ सुहृदोमेभवन्तश्चशरीरंभ्रातरस्तथा॥२३॥

टीका.। हे बानरसब आपसब हमारा मित्रहैं व भाइहैं व शरीरहैं १२ यह सबसे आयाकि श्रीराम जीके मित्रभावमे आग्रह हैं व मित्रसबसे प्रिय है इससे सख्यसंबंधजीवके लेनाउचितहै ॥ भ. गी. अ. ४ ॥ भगवान्‌के बचन अर्जुनको प्रति ॥

सएवायंमयातेऽद्ययोगः प्रोक्तः पुरातनः ॥ भक्तोऽसिमे सखाचेति रहस्यं ह्येतदुत्त-

मम् ॥ ३ ॥

टीका.। हे अर्जुन गीताशास्त्र सब दीनसे है सो ही उत्तमरहस्य हम तुमसे कहा क्योंकि तुम भक्तमें भि सखाहौ इससे आयाकि भगवान्‌के सखा अत्यन्त प्रिय हैं ॥ ३ ॥ भा. ष. स्कं. अ. ४

नयस्यसख्युंपुरुषोऽवैतिसख्युः सखात्र सन्संवसतः पुरेस्मिन् ॥ २४ ॥

टीका.। यह शरीररूपी पुरमे जीव व ईश्वर दोनों सखावास करतेहैं वार्काजीव अज्ञान से ईश्वरके सख्यसंबंधको न जानताहैं ॥ इससे आयाकि जीव के सख्यसंबंध जानना जरूर चाहिये ॥ २४ ॥

भा. स. स्कं. अ. ५ ॥ श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणंपादसेवनम् ॥ अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्मानि वेदनम् ॥ २३ ॥

टीका.। भगवान् के यसशनना व गान करना व स्तुतिकरना व कैंकर्यकरनो व चरणकोसेवा कर्ना व पूजाकरना व स्मरणकरना व सख्य संबंध रखना व शरीरको समर्पणकरना यह नौ प्रकार भक्तीहै तिस मे कौ नो प्रकार होय तो जीव को उद्धार हो जायगा ॥ २३ ॥

भा. प्र. स्कं. अ. १७ ॥ हनुमान् जीके वचन बानर सबको प्रति ॥ नजन्मनूनंमहतो न सौभगं नवाङ्नबुद्धि नांकृतिस्तोषहेतुः ॥ तैर्यद्विसृष्टानपिनोवनौ कसश्च कारसख्ये वत लक्ष्मणाग्रजः ॥ ७ ॥

टीका. । हनुनान् जी कहतेभयेकि हे बानर सबहम सबके अच्छेकुलमे जन्मनहै व भागभि अच्छानहै व वचनभि न अच्छा है व बुद्धिभिनहै व रूप भि अच्छा नहीहै और बनमेरहनेवालेहै ई सव गुणसे रहितभीहै हमसब तथापि लक्ष्मणाग्रजयों श्रीराम जी सो सखाबनालेतभये ॥ ७ ॥ इससे रामजीमे सौलभ्यगुण अतिशय सुचनहुवा व सख्य संबंध कुलादि से हीनके अधिकारहै यह सूचितहुवा ॥ ॥ ७ ॥ भ. गी. अ. ११

सखेतिमत्वा प्रसभंयदुक्तं हेकृष्ण हेयादव हेसखेति ॥ ४१ ॥ इदानींभगवन्तंक्षमापय तिसखेतिद्वाभ्यांप्राकृतः सखेतिमत्वाप्रसभं हठेन तिरस्कारेण यदुक्तं ततूक्षामयेसखेति संधिरार्षः श्रीधरस्वामिनोव्याख्येयम् ४१

टीका. । इससेभी आयाकि प्राकृत सखा भगवान्

को न मानना व दिव्यसखाजरूरमानना ॥ व यह
यो कोइ कहते है कि जीवके अभिप्राय से ईश्वर
सखानहींहैं व ईश्वरके अभिप्राय से जीवसखाहै
सो कहना ठीकनहींहै क्योंकि ऐसा कोइ प्रमाण
नहींहै दूसरा समान्य सख्यसंबंध प्रतिपादक पूर्वो
क्त वचनमे संकोच करनेमे गौरवहै व जीवके भि
अभिप्राय से ईश्वर सखाहै सो प्रमाण जीवोक्त
बचनसे विशेषकरके देखातेहैं ॥ बाल्मी. रा. अ, कां.
सर्ग ॥ १५ ॥ गुहके बचन लक्ष्मण को प्रति ॥

सोहंप्रियसखं रामंशयानं सहसीतया ॥ र-
क्षिष्यामिधनुष्पाणिः सर्बथाज्ञातिभिः सह
॥ ६ ॥ वा० रा० अ० कां० सर्ग ॥ ५८ ॥
लक्ष्मणजी के वचन सुमंत्रकोप्राति ॥ अहंता
बन्महाराजे पितृत्वंनोपलक्षये ॥ भ्राताभर्त्ता
चबंधुश्च पिताचममराघवः ३१ अहमिति
भर्त्तास्वामी पिताचेतिज्येष्ठोभ्रातापितुः सम
इत्युक्तेः ॥ वा० रा० अ० कां० सर्ग ८ ॥
गुहके बचनस्वभृत्यकोप्राति ॥ भर्ताचैव स-
खाचैव रामोदासरथिर्मम ॥ ६ ॥

टीका. इहांपर एवशब्दसे और संबंधको व्यावृत्ति

किया ॥ बा. रा. यु. कां. सर्गः ५ ॥ सुग्रीव के बचन रावण के प्रति ॥

लोकनाथस्य रामस्य सखा दासोऽस्मि राक्षस ॥ १० ॥

टीका. । सखामें दासविशेषण देनेसे सखाके भि श्रीरामजी के सेवकाईकरना उचितहै ॥ बा. रा. कि. कां. सर्गः ५ ॥ सुग्रीवजी के बचम श्रीराम जी के प्रति ॥

रोचतेयदिमेसख्यंवाहुरेषप्रसारितः ॥ गृह्य तांपाणिनापाणिर्मर्यादावध्यतांध्रुवा ॥११॥ एतत्तुवचनंश्रुत्वा सुग्रीवस्य सुभाषितम् ॥ संप्रहृष्टमनाहस्तंपीडयामासपाणिना॥१२॥

टीका. । इस श्लोकमे बिधि अर्थमेलिङ् लकार विधानकरनेसे व सुग्रीव जी के बाहुँ प्रसारने से आयाकि जीवके अभिप्रायसे श्रीरामजीसखाहैं ॥ ॥ ११ ॥ सुग्रीवजीके सुंदरबचन सुनकर श्रीराम जीके मन अत्यन्त हर्षित हुवा तब रामजी अपना दहिनाहाथ से सुग्रीवजीके दहिनाहाथ पकड़ लेते भये ॥ १२ ॥ इससे आयाकि श्रीरामजीके सख्य संबंध अत्यन्त प्रिय हैं ॥ १२ ॥ बा. रा. यु. कां. सर्गः ५ ॥ गरुडजीके बचन श्रीरामजीके प्रति ॥

अहंसखाते काकुत्स्थ प्रियः प्राणोबहिश्चरः
गरुत्मानिह संप्राप्तोयुवयोः साह्यकारणात्
नच कौतूहलं कार्यं सखित्वं प्रतिराघव॥
कृतकर्मारणेवीर सखित्वंप्रतिवेत्स्यासि ५७

टीका.। हे रामजी हमआपके सखाहैं गरुडहमारा नामहै आपके व लक्ष्मणजीके सहाय करने वास्ते हमआयेहैं ॥ ४६ ॥ लोक के प्रतारण करने वास्ते सख्यसंबंधको प्रतिविस्मय न करिये रणमे रावण आदिको मारकर बानरसबके साथ सख्यसंबंधको जानियेगा ५७ जीवोक्त ई सब पूर्वोक्त प्रमाण है तिस सब प्रमाणसे निश्चयहुवाकि जीवके अभिप्रायसे श्रीरामजी सखाहैं ॥ ३ ॥ अथ परत्व प्रकरणम् ॥ ४ ॥ राम पूर्वतापनीयो पनिषद् मे यह श्लोक है कि ॥

रमन्ते योगिनोऽनन्ते नित्यानन्दे चिदात्मनि ॥ इति रामपदे नासौपरं ब्रह्माऽभिधीयते ॥ ६ ॥

टीका.। योगी सब जिसमे रमण करतेहैं अर्थात् ध्यानसे तृप्तहोतेहैं व जिनके महिमाका अन्तनहीं है व नित्यआनन्दहैं वा चैतन्यरूपहैं इसीसे राम

शब्दकरके दशरथात्मज परंनाममुख्य ब्रह्मत्रिधा नभये इससे भि आयाकि मुख्यब्रह्म श्रीरामजीहैं ॥ ६ ॥ व रामतापनीके यन्त्रमेभि राममंत्रमुख्य है और मंत्रसव अंगमेहै इससेभि रामेजीमेमुख्य ता आया व मुख्येसमझ कर शिवजीभि काशीमे रामतारक मंत्र उपदेश करतेहैं और दुसरा मंत्र उपदशनहीकरतेंहैं व मुलरामायण मेभि लिखाहै कि विष्णूनासदृशोवीर्ये सोमवत्प्रियदर्शनः ॥ इ सव दृष्टान्तसे भि आयाकि एकएक गुणप्रधान सव देवतामेंह व ईसव गुणप्रधान श्रीरामेजीमेहै इससेभि और सवसेमुख्यता श्रीरामयजीमेआया हनुमदुक्तरामोपनिषद् के प्रमाणहै कि ॥

श्रीरामएवपरंब्रह्म रामएवपरंतपः श्रीराम एवपरं तत्वं श्रीरामोब्रह्मतारकम् ॥ ६ ॥

टीका.। श्रीरामयजी परंनाम मुख्य ब्रह्महैं और मे एवशब्दकरके परंब्रह्म केव्यावृत्तिकिया रामएव परंतत्वंनामपर देवता श्रीरामेजीहैं ई सवप्रमाण से आयाकि सबसेपरे श्रीरामेजी है ॥

वायु पुत्रेणोक्ता योगीन्द्रा ऋषयो विष्णु भक्ताः पुनः पप्रच्छुर्हनुमन्तंरामस्याङ्गान् नोब्रूहि हनुमन् ॥ सहोवाच वायुपुत्रः ॥

विघ्नंवाणींदुर्गां क्षेत्रपालं सूर्यं चन्द्रं नारा-
यणं नारसिंहं बासुदेवं वाराहम् अन्यांश्च
कांश्चित् सर्बान् मंत्रान् श्रीसीतां लक्ष्मणं
हनुमन्तं शत्रुघ्नं बिभीषणं सुग्रीवं अङ्गदं
जामबन्तं प्रणवम् एतान् रामस्याङ्गन्
जानीयात् ॥ राम मंत्रं जपता केचाङ्ग
मंत्राजप्तव्याः इति तृतीयंसन्देहं पृच्छति
बायुपुत्रेणोक्ता इति ॥ अङ्गान् अङ्गस्थानी
यान् मंत्रान् देवाँश्चब्रूहि हेहनुमन् ॥ बाणी
सरस्वती विघ्नादयो बाराहान्तादशाङ्ग
देवताः ॥ अन्यांश्चकाँश्चित् बशिष्ट बाम
देवादीन् अन्येषामप्रधान सूचनायसमान्य
शब्दप्रयोगः ॥ श्रीवीजपूर्विकांसीतां सीता
दयः प्रणवान्तादशएतान् रामस्यअङ्गान्
अङ्गमंत्रान्जानीत ॥

टीका. । इस प्रमाण सेभि आयाकि राम मन्त्रके
अङ्ग और मंत्रहै व रामजीके अङ्ग और देवता
हैं व श्रीरामजी अङ्गीभये ॥ यह अथर्वण वेदके
प्रथमखण्डहैं ॥ तिस्का टीका संस्कृतमे नारायण

भट्टकाहैं सोयोहमलिखेहैं॥ यजुर्वेदसुदर्शनसंहितायाम्॥ मत्स्यश्चरामहृयस्तथोरूतुजनार्द्दनः॥ कूर्मश्चाधारशक्तिः स्याद्वाराहोभुजयोर्बलम्॥ १॥

मत्स्यश्च रामहृद्यस्तथो रूतु जनार्द्दनः॥ कुर्मश्चाधार शक्तिः स्याद्वराहो भुजयोर्वलम्॥ १॥ नरासिंहो महाकायोबामनः कटिमेखला॥ भार्गवो जंघयोर्यातो वलरामश्च पृष्टतः॥ २॥ वौधश्च करुणासाक्षात् कल्किश्चित्तस्यहर्षतः॥ कृष्णः श्रृंगाररूपंच वृंदावन बिभुषणः॥ ३॥ एतेचांशकलाश्चैव रामस्तुभगवान्स्वयम्॥

टीका.। मत्स्यरूप श्रीरामजीकेहृदयहैं वजनार्दन उरूहै व कूर्म आधारशक्तिहैं व बराह दोनोभुजाकें वलहैं॥ १॥ ब नरसिंहदेहहैं व बामनकटिमेखलाहैं वपरशुराम दोनोजंघासेहैं व वलरामपीठसेहैं॥ २॥ व बौध दयासेहैं व कल्कि चित्तके हर्षसेहैं व कृष्ण श्रृँगारहैं एतने यो अवतारहैं सो श्रीरामजीके अंशकलाहैं व श्रीरामजीस्वयम् भगवान्हैं॥ अथ सामवेदे भरद्वाज संहितायाम्॥

अवताराबहवःसन्तिकलांशाश्चविभूतयः।

रामएवपरंब्रह्म सच्चिदानन्दमव्ययम् ॥५॥

टीका । श्री रामजी के अवतार वहुतहैं कोइ कलाहैं व कोइ अंशहैं ब कोइबिभूतिहैं व श्री रामजी परंब्रह्महैं व सच्चिदानन्दहैं व अव्ययहैं अर्थात् नित्यहैं ॥ ५ ॥ अथ ऋग्वेदे हनुमत्संहितायाम् ॥ हनुमान्‌जीकेवचन अगस्त्यजीकोप्रति ॥

तुरीयाजानकीप्रोक्ता तुरीयोरघुनन्दनः ॥
उभयोरंशजाः सर्वेचावताराह्यसंख्यकाः ६
सर्वेषामवताराणाम वतारीरघूत्तमः ॥ श्रुतं
दृष्टंमया सर्वेचीरायुर्जीवनान्मुने ॥ ७ ॥

टीका । श्रीजानकीजी वश्रीरामजीचतुर्थअवस्था हैं व यहदोनोके अंशसे सव अवतारहैं ॥ ६ ॥ व सबअवतारके अबतारी श्री रामजीहैं हे अगस्त्य मुनी वहुतदीनजिबसे हमने सुनाह व देखाभि है ॥७॥ अथर्वणउत्तरार्द्धेश्रुतिरियम् ॥

यस्यांशेनैव ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा अपिजाता
महाविष्णु र्यस्यदिव्यगुणाश्च सएवकार्य
कारणात्परः परमपुरुषोरामोदाशरथिर्वभूव

टीका । जिससाकेतविहारीश्रीरामजीकेअंशसे ब्रह्मा बिष्णु महेशजायमानहैं व महाविष्णुदिव्यगु

णहैं सोकार्यकारणसे परपरमपुरुषरामजीदाशरथी होतेभये ॥ अनन्तसंहितायाम् ॥

ब्रह्माविष्णुमहेशाद्यायस्यांशालोकसाधकाः
तमादिदेवं श्रीरामंविशुद्धंपरमंभजे ॥ १ ॥

ब्रह्माविष्णुमहेश यहतीनो श्रीरामजीकेअंशहैं इसी से श्रीरामजीआदिदेवहैं व परहैं ॥ १ ॥

रकाराज्जायते ब्रह्मा रकाराज्जायते हरिः ॥
रकाराज्जायते शंभू रकारात्सर्वशक्तयः॥ २॥

टीका.। राममे जोरेफहै तिससे ब्रम्हा हरि शंभु व शक्तिजायमानहैं इससे सबको कारण श्रीरामजी भये ॥ २ ॥

रामित्येकाक्षरं ब्रह्मकारणं प्रणवस्य च ॥
तस्माद्ब्रह्माहरिःशंभुर्योगिनः समुपासते ३

टीका.। राममंत्रकेबीज ओंकारके कारणहैं तिसी से ब्रम्हाहरिशिव वयोगीसवरांबीजाको जपतेहैं ।३।

रामनाम प्रभावेण स्वयंभूः सृजतेजगत् ॥
बिभर्ति शकलंविष्णुः शिवः संहरतेपुनः ४

टीका.। रामनामके प्रभावसे ब्रह्मासंसारको उत्पत्तिकरतेहैंवा विष्णुपालनकरतेहैं वा शिव संहार

करतेहैं ॥४॥ यहसबप्रमाणसेआयाकिश्रीरामजी साकेतविहारी ब्रह्माविष्णुमहेशसबसेपरहैं व अवतारीहैं क्योंकि उनहींसे सबअवतारहोताहै व जहांपर विष्णुकेअवताररामजीको लीखेहैं तहांपर कल्पभेद कल्पनाकरनाकि कोइकल्पमेसाकेत विहारी दशरथजीकिहांअबतारलिये व कोइकल्पमें विष्णुदशरथजीकेयहां अवतारलिये यहमाननेसे विरोधछुटजाताहै ॥ ४ ॥ अथसाकेतप्रकरणम् ॥ ॥ ५ ॥ महासुन्दरीतन्त्रे ॥

जनकउवाच ॥ कस्मिन्पृष्ठेमहादेविनित्यं रामः प्रतिष्ठितः ॥ पूर्णानन्दो घनश्यामो मायागुण विडम्बकः ॥ ५८ ॥ श्रीजानक्यूवाच ॥ गोलोक संज्ञकेनित्ये साकेतभवनोत्तमे ॥ भ्रातृभिरनु जैर्भाति देव देवः सनातनः ॥ ५९ ॥

टीका। जनकजी जानकीजीसे पुछतेभयेकि हे महादेवि रामजीकौनस्थानपर बराबररहतेहैं ५८ तबजानकीजी कहतेभयेकि गोलोकनित्यहै तिसमे सबभवनसे उत्तम साकेत नामकभवनहैं तिसमे भाइसबकेसाथ देवकेभि देवसनातन श्रीरामजी

रहतेहैं ॥ ५६ ॥ सदाशिवसंहितायाम् ॥
सौमित्रि वाक्यं वेदान् प्रति ॥ महर्ल्लोकः क्षितेरूर्द्धं एककोटि प्रमाणतः ॥ कोटिद्वये नविख्यातो जनलोकस्ततः परः ॥ १ ॥ चतुः कोटिप्रमाणं तुतपोलोकस्ततःपरः ॥ उपरिष्ठांक्षितेः सत्यमष्टकोटिप्रमाणतः॥२॥ अपांप्रख्यास्तकौमारः कोटिषोड़शतत्परः ॥ तदूर्द्धोपरिसंख्यात उमालोकः सुनिष्ठितः॥ ॥ ३ ॥ शिवलोक स्तदूर्द्धस्तु प्रकृत्या च समागतः॥ विश्वस्यपुरतोव्रातिः शिवलोक पुरतोवहिः ॥ ४ ॥ एतस्मादि हराव्रतिः सप्तवरणसंज्ञकाः ॥ तदूर्द्धः कोटिपंचाशत् क्रमाद्दशगुणात्परः ॥ ५ ॥ भूमिरापोनलो वायुःखमहंचत्रिधापरम्॥ प्रकृतिमहामूलेन सप्तवरणसंज्ञकाः ॥ ६ ॥ तदूर्द्धं सर्वसत्वा नां कार्यकारण मानिनाम् ॥ निलयं परमं दिव्यं महावैष्णव संज्ञकम् ॥ ७ ॥ सहस्र मूर्द्धाविश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ य- न्निमेष,जगत्सर्वंल्लीनभूतव्यवस्थितम् ॥८॥

उद्भवन्ति विनश्यन्ति कालज्ञानबिडंबनैः॥
यस्यांशेन समुभ्दूता ब्रह्म विष्णु महेश्वराः
॥९॥ एत्तद्गुह्यंसमाख्यातं ददातिवांछितं
हिनः ॥ तदूर्ध्वंतुपरंदिव्यं सत्यमन्य व्यव-
स्थितम् ॥ १० ॥ न्यासिनांयोगिनांस्थानं
भगवद्भावनात्मनाम् ॥ महाशंभुर्मोदतेतत्र
सर्वशक्तिसमान्वितः ॥ ११॥ तदूर्ध्वस्तुपरः
कांतोमहावैकुंठसंज्ञकः॥ वासुदेवादयस्तत्र
विहरन्ति स्वमायया ॥ १२ ॥ तदूर्ध्वस्तु
स्वयंभाति गोलोकः प्रकृतेः परः ॥ वाङ्म
नोगोचरातीतो ज्योतीरूपसनातनः॥१३॥
तस्यमध्येपुरंदिव्यं साकेतमितिसंज्ञकम् ॥
योषिद्रत्नमणिस्तंभ प्रमदागणसेवितम् ॥
॥ १४ ॥ तन्मध्येपरमोदारः कल्पवृक्षोवर
प्रदः ॥ तस्याधः परमंदिव्यंरत्नमण्डपमुत्त
मम् ॥ १५ ॥ तन्मध्येवादिकारम्या स्वर्ण
रत्न विनिर्मिता ॥ तन्मध्येतु परंशुभ्रं रत्न
सिंहासनं शुभम् ॥ १६ ॥ सहस्रारं महा
पद्मंकर्णिकारैः समुन्नतम्॥ तन्मध्येजानकी

देवीसर्वशक्तिसमविन्ता ॥ १७ ॥ तत्रास्ते भगवान् रामः सर्वदेवशिरोमणिः ॥ स्निग्धेन्दीवरः श्यामः कोटीन्दुललितद्युतिः ॥ ॥ १८ ॥ बशिष्ठ वामदेवादिमुनिभिः परिवारितः ॥ लक्ष्मणः पश्चिमेभागे धृतछत्रः सचामरः ॥ १९ ॥ उभौ भरत शत्रुघ्नौ तालवृन्दा करांबुजौ ॥ अग्रेऽयग्रं हनूमन्तं वाचयन्तंसुपुस्तकम् ॥२०॥ इतिध्यानम् ॥

टीका.। पृथिवीसे १ कोटियोजन उपर महर्लोकहै व पृथिवीसे २ कोटि योजन उपर जनलोकहै व पृथिवीसे ४ कोटियोजनउपर तपलोकहै व पृथिवीसे ८ कोटियोजन उपर कौर्तिकाय लोकहै तिससे उपर उमालोकहै तिससेउपर शिबलोकहै तिससें उपर सात आवरणहैं ॥ शिवलोक से उपर ५० कोटि योजनउपर पृथिबी के यो प्रमाण कहा है तिससे दश गुणोत्तर करिके जल व अग्नि व वायु व आकाश ब अहंकार यो अहंकार तीन प्रकारके है महाप्रकृति कारणसे यह सप्तआवरण है ॥ तिससे उपर सबप्राणीके कारणरूपी महाविष्णुके स्थानहैं यो स्थानपरमादिव्य महावैष्णवसंज्ञकहै ॥ ८ ॥ यो

महाविष्णु संसारके आत्माहैं जिनकेअनेक शीर्षहै
व अनेक नेत्रहै व अनेकपदहै यह यो सहस्रशब्दहै
सोअनेकवाचीहैं ॥९॥ व जिसमहा विष्णुकेएकपल
मे संसारउत्पन्नहोताहै व स्थिरहोताहैव नाशहोता
हैवाजिनकेअंशसेब्रह्माविष्णुमहादेवउत्पन्नहोतेहैं१०
यहविषयगुह्यहै सोहमकेवांछितफलादिये। इससेउप
र अतिउत्तमयोगीकेस्थानसत्यलोकहै जहांपरयोगी
लोगमनमेंभगवान्कोसततभावनाकरतेहैं औरउस
सत्यलोकमेसबशक्तिसे युक्तहार्षितमहाशंभुरहतेहैं॥
॥१२॥ उससे उपरअतिउत्तम महावैकुंठसंज्ञकहै
उसमेवासुदेवसंकर्षणप्रद्युम्नअनिरुद्धयहसव अपने
मायासेविहारकरतेहैं ॥१३॥ उससेउपरस्वयंप्रकाश
गोलोकहै उसमेंज्योतिस्वरूप ईश्वरनिवासकरतेहैं
योज्योतिरूपप्रकृतिसेपरेहैं बचनसे वमनसेपृथक्हैं
वसनातनहैं ॥१४॥ तिसकेबीचमें परमदिव्यसाकेत
पुरहै स्त्रीसबसेसेवितहैं १५ सांकेतपुरकेमध्यमेंकल्प
बृक्षहै चरकोदेनेवाला व कल्पवृक्षकेनीचे अतिउत्त
म परमसुन्दर रत्नकेमंडपहै ॥१६॥ उसमंडपके म-
ध्यमे अतिसुन्दर व रत्नसेनिर्मित बेदिकाहै उस बे
दिका के मध्यमें एकरत्नसेनिर्मित सिंहासनहै अ-
तिस्वक्ष व अतिसुन्दरहै ॥१६॥ उससिंहासनके म
ध्यमें हजारदलके कमलकेफूलहैं तिसकेमधयमें स-

व शक्तिसंयुक्तज्ञानकीदेवीहैं ॥ १९ ॥ उसीस्थानमें सबदेवमेंश्रेष्ठ अतिचिक्कनश्याम कमलदल सदृश कोटिचंद्रमाके सदृशमनोहर कान्तिमान् श्री रामजी बिराजमानहैं ॥ १८ ॥ व बशिष्ठबामदेवादिक मुनिसेसेवितहैं वपीछेमेंलक्ष्मणजि बामहाथमेछाता लगाय खड़ेहैं व दाहिनाहाथले चवरडोलातेहैं ॥१९ व श्रीरामजीके दाहिनाभागमे भरतजी तारकेपंखा डोलातेहैं वा वामभागमेंशत्रुघ्नजी कमलकेफूलहाथमेलियेखड़ेहैं व हनुमानजि आगेमें स्तुतिकरतेहैं इसरीतिसे श्रीरामजीको ध्यानभीकरना ईसब लक्ष्मणजीचारोवेदसेकहतेभये ५ अथशरणप्रकरणम् ६ वेदशास्त्रको यथार्थअर्थकोजानतेरहें इसीसेपहिले मुनिपदवीरही ॥ तिससेपीछे सुलभऋषिपदवीहुई कीकहांपर कौनमंत्रसे कौनकर्महोताहै ॥ तिससे पीछे सुलभआचर्य्य पदवीहुईकी इतिहासपुराणको जानतेरहें ॥ तिससेपीछेसुलभआनन्दपदवीहुईकी रामानन्दस्वामी व नीमानन्दस्वामीकीआठोपहर रामजीमें आनन्दरहतेरहे व नीमके प्रतिमा योहै जगन्नाथाजी तिसमेआनन्दरहतेरहे ॥ तिससेपीछे सुलभदासपदवीहुईकी श्रीरामजीके कैंकर्य्य करते रहे ॥ अबश्रीरामजीको कैंकर्य्यभि नहोसकताहैतो झूठादासकहना ठीकनहीहै ॥ इसीसेसबसे सुलभ

शरणपदवीहै कीसीतारामशरण अर्थात् सीताराम रक्षकहैं ई अर्थ घटताहै क्योंकि जगतका जबरक्षक हैं तो क्या अपनेभक्तका रक्षा नकरेंङ्गे क्योंकिविश्व भर व प्रणतपाल नामहै व श्रीरामजीके वाक्यहै की ॥ वा. रा. यु. कां. सर्गः ॥ १८ ॥

सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते ॥ अ-
भयं सर्वभूतेभ्योददाम्यतद्व्रतंमम ॥ ३३ ॥

टीका.। एकवेर भीं कोई हमारा भक्त याचना करताहैं की हमआपकेहैं तिसको हम सबभूत से अभयकरदेतेहैं अर्थात् मोक्षदेतेहैं ॥ ३३ ॥ शरण रक्षककोकहतेहैं तिसमे प्रमाण अमरकोश नानर्थ वर्ग तृतीय काण्ड ॥ शरणं गृह रक्षित्रोः श्रीपर्णं कमलेऽपिच ॥ ५२ ॥ गृहरक्षितरि शरणम् ॥ गृह अर्थमे व रक्षक अर्थम शरणशब्दहैं शरण होनेको प्रमाणकहते हैं ॥ श्वेताश्वोपनिषदमे यहमंत्रहै की

योब्रह्माणं विदधातिपूर्वंयो वैवेदांश्चप्रहिणो
तितस्मैतंहदेवमात्मबुद्धिप्रकाशंमुमुक्षुर्वै शर
णमहंप्रपद्ये ॥ १ ॥

टीका.। यो नारायणदेव पहिले ब्रह्माको उत्पन्न करते भये व वेद पढाते भये ऐसा यो हैं आत्म

बुद्धि को प्रकाश करनेवाला देव तिनके शरण मे मोक्ष को इच्छा वाले हम प्राप्त हैं ॥ १ ॥

भ. गी. अ. १८ ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्यमामे कंशरणंव्रज ॥ अहंत्वासर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामिमाशुचः ॥ ६६ ॥ ततोऽपिगुह्यतममाहसर्वेतिमद्भक्त्यैव सर्वंभविष्यती तिदृढबिश्वासेनविधि कैंकर्यं त्यत्कामदेकशरणोभव एवंबर्त्तमानः शोकंमाकार्षिः यतस्त्वांमदेक शरणं सर्वपापेभ्योऽहंमोचयिष्यामि ॥६६॥

टीका. । यह श्रीधरस्वामी के टीकाहै ॥ बा. रा. यु. कां. सर्गः ॥ १९ ॥ विभीषण जी के बचन श्रीराम जी को प्रति ॥

भवन्तंसर्बभूतानांशरण्यंशरणंगतः ॥ परित्यक्तामयालंकामित्राणिचधनानिच ॥ ५ ॥

टीका. । हे रामजी लंका व मित्र व धन यह सब को छोडकर सब प्राणी को शरण देनेवाले आप के शरण मे हम प्राप्तहुये ॥

श्री. म. भा. स्कं. अ. ॥ ११ ॥ यस्यामलंन्नृप सदस्सुयशोऽधुनापिगायन्त घन्घमृषयो दि

गिभेद्रपट्टम् ॥ तन्नाकपालवसुपाल किरीट जुष्टपादाम्वुजं रघुपतिंशरणंप्रपद्ये ॥ २१ ॥

शरणागति मंत्रहैकी ॥ श्रीरामः शरणंमम ॥ तिसका अर्थ श्रीसीताजीके सहितरामजी हमरा रक्षकहैं ॥ ई सवसे आयाकी शरणपदवी सबसे सुलभ व अच्छाहै इससे आगे सुलभ व अच्छा पदवी दूसरी नहीं होसकत्ती है ॥ ६ ॥ श्रीराम तत्व सिद्धान्तः श्रीरामशरणाद्भवः ॥ हर्षदोऽस्तु विशेषण सीतारामीयधीमताम् ॥ १ ॥ इति श्री परमहंस रामशरण कृत श्रीरामतत्व सिद्धान्त नामक ग्रंथः समाप्तः ॥